भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली
पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

आज़ादी का अमृत महोत्सव

खण्ड–XXVIII अंक–14 31 जुलाई, 2023

परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान्। पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम्।।
आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवार्षिर्नारदस्तथा। असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे।।

अर्जुन बोले– आप परम ब्रह्म, परम धाम और परम पवित्र हैं; क्योंकि आपको सब ऋषिगण सनातन, दिव्य पुरुष एवं देवों का भी आदिदेव, अजन्मा और सर्वव्यापी कहते हैं। वैसे ही देवर्षि नारद तथा असित और देवल ऋषि तथा महर्षि व्यास भी कहते हैं और आप भी मेरे प्रति कहते हैं। **श्रीमद्भगवद्गीता 10/12,13**

बधाई (चयन/पदोन्नति)

स्थापना अनुभाग–1 से प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार निम्नलिखित संकाय सदस्यों को उनके नाम के आगे दिए गए पद के लिए चयनित/पदोन्नत किया गया है–

संकाय सदस्य का नाम	पिछला पदनाम	नया पदनाम	विभाग/केन्द्र	वेतनमान
श्री गोपाल कृष्ण	सिस्टम प्रबन्धक	वरिष्ठ सिस्टम प्रबन्धक (SG)	कम्प्यूटर सेवा केन्द्र	₹ 1,59,100–2,20,200 (लेवल–14ए)
डॉ. राम लाल	सिस्टम प्रबन्धक	वरिष्ठ सिस्टम प्रबन्धक (SG)	कम्प्यूटर सेवा केन्द्र	₹ 1,59,100–2,20,200 (लेवल–14ए)
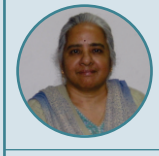 **प्रो. (सुश्री) आर. उमा**	सह प्रोफेसर	प्रोफेसर	ऊर्जा विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग	₹ 1,59,100–2,20,200 (लेवल–14ए)
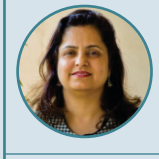 **प्रो. (सुश्री) आशु वर्मा**	सह प्रोफेसर	प्रोफेसर	ऊर्जा विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग	₹ 1,59,100–2,20,200 (लेवल–14ए)
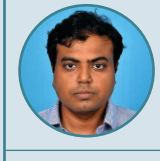 **प्रो. देबप्रसाद साहू**	सहायक प्रोफेसर	सह प्रोफेसर	ऊर्जा विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग	₹ 1,39,600–2,11,300 (लेवल–13ए2)
प्रो. बिपिन कुमार	सहायक प्रोफेसर	सह प्रोफेसर	वस्त्र एवं रेशा इंजीनियरी विभाग	₹ 1,39,600–2,11,300 (लेवल–13ए2)

स्वागत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2023/173827 दिनांक 13.07.2023 के अनुसार **प्रो. अम्बर श्रीवास्तव** ने 10.07.2023 से संस्थान के यांत्रिक इंजीनियरी विभाग में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल–11 में सहायक प्रोफेसर (ग्रेड-II) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. अम्बर श्रीवास्तव को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो, के लिए) संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-4/2023/174470 दिनांक 14.07.2023 के अनुसार **प्रो. दीपक अलोक** ने 11.07.2023 से संस्थान के मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल–11 में सहायक प्रोफेसर (ग्रेड-II) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. दीपक अलोक को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो, के लिए) संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt.-II/2023/176169 दिनांक 19.07.2023 के अनुसार **श्री संदीप मीणा** ने 23.06.2023 से संस्थान में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल–5 में प्रशासनिक सहायक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

त्यागपत्र स्वीकृत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2023//170406 दिनांक 04.07.2023 के अनुसार **डॉ. कांति नंदन मिहूलिया,** पोस्ट डॉक्टरल फेलो (रासायनिक इंजीनियरी विभाग) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 21.07.2023 से स्वीकार कर लिया है। अतः डॉ. कांति नंदन मिहूलिया को 21.07.2023 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2023//159266 दिनांक 29.05.2023 के अनुसार **डॉ. विजय गोपाल कोवाली,** प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस (ट्रिप केन्द्र) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 28.07.2023 से स्वीकार कर लिया है। अतः डॉ. विजय गोपाल कोवाली को 28.07.2023 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है।

सेवानिवृत्तियाँ

संस्थान के निम्नलिखित स्टाफ सदस्य अधिवर्षिता की आयु होने पर 31 जुलाई, 2023 को अपराह्न में संस्थान से सेवानिवृत्त हो रहे हैं :–

डॉ. राम लाल (15629), वरिष्ठ सिस्टम प्रबन्धक, (SG), कम्प्यूटर सेवा केन्द्र

डॉ. राम लाल ने वर्ष 1984 में रोहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली (यूपी) से एम.एससी. (गणित) की उपाधि प्राप्त की। वर्ष 2000 में टाटा इन्फोटेक दिल्ली से सूचना प्रौद्योगिकी में मास्टर डिप्लोमा और वर्ष 2007 में जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली से पीएचडी (ई–गवर्नेंस) की उपाधि प्राप्त की।

आपने वर्ष 2000–2001 के दौरान ईपीएफओ के लिए पाठ्यक्रमों के लगभग 10 बैचों में सह–समन्वय/संकाय के रूप में भी भाग लिया है। आपने MATLAB प्रोग्रामिंग तथा SciLab पर कई कार्यशालाएँ आयोजित की हैं। इस कोर्स को विद्यार्थियों ने काफी पसन्द किया। आप संस्थान के ग्रुप–डी कर्मचारियों के लिए कौशल विकास कार्यक्रम में समन्वयक/संकाय भी रहे हैं।

आप संस्थान के ग्रुप ए, बी और सी स्टाफ के लिए कंप्यूटर जागरूकता कार्यक्रम में एक संकाय/समन्वयक के रूप में भी शामिल रहे हैं। आपने सीईपी/क्यूआईपी के माध्यम से समर फैकल्टी रिसर्च फेलोशिप में 29 संकाय सदस्यों का मार्गदर्शन किया और प्रो. आर.के. शर्मा (गणित विभाग) और प्रो. ए.डी. गुप्ता (यांत्रिक इंजीनियरी) के साथ एम.एससी., बी.टेक. एवं एम.टेक. परियोजना में सह–मार्गदर्शन भी किया।

आपने संस्थान छात्र समुदाय के लिए MATLAB प्रोग्रामिंग पाठ्यक्रम शुरू किया। आपने वर्ष 2000 से संस्थान के बी.टेक., एम.टेक. और पीएच.डी. शोध विद्यार्थियों को MATLAB प्रोग्रामिंग SciLab प्रोग्रामिंग पढ़ाया। आपकी अनुसंधान रुचि के क्षेत्रों में डिजिटल इमेज प्रोसेसिंग, फजी लॉजिक, क्रिप्टोग्राफी का उपयोग करते हुए ई–गवर्नेंस अनुप्रयोग, आदि शामिल रहे। अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं और राष्ट्रीय सम्मेलनों में आपके कई पेपर्स प्रकाशित हुए हैं। आप कई सरकारी कार्यालयों की चयन समितियों में भी सदस्य रहे। सौम्य एवं मृदुभाषी डॉ. राम लाल एक कर्मठ, मेहनती एवं मिलनसार वरिष्ठ सिस्टम प्रबंधक रहे हैं।

श्री प्रेम कुमार सिंघल (25228), कार्यपालक इंजीनियर, निर्माण संगठन

श्री प्रेम कुमार सिंघल ने 02.03.1984 को संस्थान में कनिष्ठ इंजीनियर (सिविल) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 01.04.1992 को आर. ऐन्ड सी.डी.एस. के अन्तर्गत आपको कनिष्ठ इंजीनियर (सिविल) के रूप में पदोन्नत किया गया। 01.05.1998 को आर.सी.पी.एस. के अन्तर्गत आपको सहायक इंजीनियर के रूप में मैप किया तथा 01.04.2004 को वरिष्ठ सहायक इंजीनियर के रूप में पदोन्नत किया गया। 30.01.2009 को एल.डी.ई. के अन्तर्गत आपको सहायक कार्यपालक इंजीनियर के रूप में नियुक्त किया गया।

05.11.2016 को भर्ती नियमों के अन्तर्गत आपको लेवल–11 मे वित्तीय उन्न्यन दिया गया तथा 05.11.2021 को आर. ऐन्ड पी.आर.एस. के अन्तर्गत आपको लेवल-12 में वित्तीय उन्नयन दिया गया। 03.03.2023 को डी.पी.सी. के अन्तर्गत आपको कार्यपालक इंजीनियर के रूप में पदोन्नत किया गया। सौम्य स्वभाव के श्री प्रेम कुमार सिंघल एक कर्मठ, मिलनसार एवं मेहनती कार्यपालक इंजीनियर रहे हैं।

श्री प्रदीप वर्मा (26263), सहायक अभियन्ता (विद्युत), निर्माण संगठन

श्री प्रदीप वर्मा ने 03.03.1992 को संस्थान में कनिष्ठ अभियन्ता के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 01.04.1993 को आर. ऐन्ड सी.डी.एस. के अन्तर्गत आपको कनिष्ठ अभियन्ता (ग्रेड-II) (विद्युत) के रूप में मैप किया गया। 01.05.1998 को आर.सी.पी.एस. के अन्तर्गत आपको कनिष्ठ अभियन्ता के रूप में मैप किया तथा 01.04.2004 को इसी योजना के अन्तर्गत आपको सहायक अभियन्ता के रूप में मैप किया गया। 03.03.2012 को एम.ए.सी.पी. के अन्तर्गत आपको ग्रेड वेतन 4800/–रु. में उन्नयन दिया गया तथा 22.12.2022 को आर. ऐन्ड पी.आर. के अन्तर्गत आपको सहायक इंजीनियर (विद्युत) के रूप में पुनर्पदनामित तथा 03.03.2022 को इसी योजना के अन्तर्गत लेवल-9 में उन्नयन दिया गया। मृदु स्वभाव के श्री प्रदीप वर्मा एक योग्य एवं कर्मठ सहायक अभियन्ता रहे हैं।

श्रीमती सावित्री चौधरी (27196), तकनीकी सहायक, भा.प्रौ.सं. अस्पताल

श्रीमती सावित्री चौधरी ने 08.04.1983 को संस्थान में क्लास-IV नर्सिंग अर्दली अटेन्डेन्ट के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 01.05.1991 को आपको आर. ऐन्ड सी.डी.एस. के अन्तर्गत 950-1400/रु. 3050-4590/–रु. के वेतनमान में पदोन्नत किया गया। 01.05.2001 को एम.ए.सी.पी. के अन्तर्गत आपको 4000-6000/–रु. में पदोन्नत तथा 01.05.2012 को ग्रेड वेतन 2800/–रु. में उन्नयन दिया गया। 23.02.2017 में आपको कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक के रूप में ग्रुप 'सी' में नियोजित किया गया। 22.12.2022 को आर. ऐन्ड पी.आर.एस. के अन्तर्गत आपको तकनीकी सहायक के रूप में पुनर्पदनामित किया गया। सौम्य स्वभाव की श्रीमती सावित्री चौधरी एक मेहनती एवं कर्मठ तकनीकी सहायक रही हैं।

श्री शिव प्रकाश (70104), कनिष्ठ मैकेनिक, निर्माण संगठन

श्री शिव प्रकाश ने 31.03.1989 को संस्थान में ग्रुप 'डी' हेल्पर/बेलदार के रूप में 750-940/800-1150/–रु. में कार्यभार ग्रहण किया था। 01.04.1997 को आपको आर. ऐन्ड सी.डी.एस. के अन्तर्गत 3050-4590/–रु. के वेतनमान में पदोन्नत किया गया। 01.09.2008 को एम.ए.सी.पी. के अन्तर्गत आपको 2000/–रु. ग्रेड वेतन में उन्नयन दिया गया। 04.04.2016 में आपको कनिष्ठ मैकेनिक के रूप में ग्रुप 'सी' में नियोजित किया गया तथा 01.09.2018 में आपको लेवल–4 में उन्नयन दिया गया। श्री शिव प्रकाश एक योग्य एवं कर्मठ कनिष्ठ मैकेनिक रहे हैं।

श्री खुशी राम (60107), मसालची, गिरनार छात्रावास

श्री खुशी राम ने 04.08.1988 को संस्थान में कार्यभार ग्रहण किया था। आपने लगभग 35 वर्षों तक संस्थान के छात्रावासों में सेवाएं प्रदान की हैं। श्री खुशी राम एक कर्मठ एवं मेहनती मसालची रहे हैं।

संस्थान समुदाय उपरोक्त स्टाफ सदस्यों को भावभीनी विदाई देते हुए उनके व उनके परिवार के लिए सुख, समृद्धि एवं शांतिमय जीवन की कामना करता है।

आजादी का अमृत महोत्सव

अभय भूमि है भारत, परंपरा बनी देश की संजीवनी; यहाँ है विश्व की सर्वोत्तम संस्कृति

–डॉ. सच्चिदानंद जोशी

भारत उस समष्टिगत चेतना का नाम है जिसका अस्तित्व कई हजार साल पुराना है। सच्चिदानंद जोशी के अनुसार यह सही वक्त है जब हमें गुलामी के कालखंड के कारण उत्पन्न न्यूनताबोध व इसके दुस्वप्न को सीमित कर स्वावलंबन के नए क्षितिज का निर्माण करना होगा।

भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूर्ण होने का उत्सव प्रारंभ हो चुका है। सभी अपनी–अपनी उपलब्धियां स्वतंत्रता के इस पर्व को समर्पित कर रहे हैं। यह स्वतंत्रता के लिए हुए संघर्ष की गाथाओं को याद करने का दौर है। आज भारत की जनसंख्या का बहुत बड़ा भाग ऐसे व्यक्तियों का है जिन्होंने आजादी के संघर्ष के बारे में सिर्फ सुना और पढ़ा ही है। ऐसे में भारत की स्वतंत्रता के लिए जन–जन द्वारा किए गए संघर्ष तथा लाखों लोगों के तप एवं बलिदान के बारे में देश को संवेदनशील बनाना समय की आवश्यकता है। जिस पीढ़ी ने प्रत्यक्ष गुलामी भोगी ही न हो या जिसने सीधे–सीधे अस्तित्व के लिए संघर्ष न किया हो, उस पीढ़ी को उन बातों का एहसास दिलाना चुनौती भरा कार्य है।

विश्व की सर्वोत्तम संस्कृति

भारत का इतिहास और अस्तित्व हजारों साल पुराना है। इसलिए इसकी अस्मिता को कुछ 100 वर्ष की गुलामी तथा 75 वर्ष की स्वतंत्रता के इतिहास में सीमित कर नहीं देखा जा सकता। यह समय भारत के 'विराट तत्व' का साक्षात्कार करने का है। विष्णु पुराण में उद्धरित है–

उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चौव दक्षिणम्। वर्षे तद् भारतं नाम भारती यत्र संततिः। (विष्णुपुराण 2-3-1)

अर्थात समुद्र के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में जो देश है उसे भारत कहते हैं तथा उसकी संतानों (नागरिकों) को भारती कहते हैं।

जिस पीढ़ी को इतिहास के अध्यायों में यह बार–बार रटवाया गया हो कि भारत को एक करने का श्रेय अंग्रेजों को जाता है या यह कि भारत की अस्मिता एक देश के रूप में पहले थी ही नहीं, उनके लिए यह श्लोक आंखें खोल देने वाला हो सकता है। इस श्लोक में उद्धरित भारत की परिसीमाएं हाल के वर्षों में किसी खगोलशास्त्री द्वारा दी गई परिसीमा नहीं हैं, बल्कि आज से हजारों साल पहले लिखे गए तथा उससे पूर्व में स्मरण किए गए भारत नामक राष्ट्र की परिसीमा है। यह उस भारत देश की परिसीमा का वर्णन है जहां की विद्वता तथा सांस्कृतिक परंपरा पूरे विश्व में सर्वोत्तम थी और जहां ज्ञान प्राप्ति के लिए पूरे जगत से लोग आते थे।

समूचे विश्व की प्रेरक भूमि

विडंबना यह है कि भारत की उस गौरवशाली सांस्कृतिक परंपरा, जिसमें अध्यात्म, दर्शन, ज्ञान, विज्ञान, शिल्प, स्थापत्य, सौंदर्यबोध, कला, वस्त्र, भोजन जैसे अनेक गुणों का समावेश है, को गुलामी के वर्षों में षड्यंत्रपूर्वक भुलाने का प्रयास किया गया। प्राचीन भारतीय इतिहास पर यदि हम दृष्टिपात करें तो देखते हैं कि भारत की यह सभी परंपराएं और ज्ञानधाराएं न सिर्फ अक्षुण्ण बनी रहीं बल्कि समय–समय पर संवर्द्धित होती रही हैं। ऐसे अनेक उदाहरण हम भारत के इतिहास से सीख सकते हैं जिसमें भारत ने न सिर्फ अपने अस्तित्व को समृद्ध किया, बल्कि समूचे विश्व को लाभान्वित भी किया है। प्रसिद्ध मानवविज्ञानी विल डुरांट ने जब भारत की इस प्राचीन समृद्ध संस्कृति का वर्णन किया है तो उन्होंने स्वीकार किया कि इस नाते भारतभूमि समूचे विश्व की प्रेरक भूमि रही है तथा सबने इसी से प्रेरणा ग्रहण कर विकास की दिशा पाई है।

अद्भुत पराक्रम का परिणाम

कालांतर में अपने नैसर्गिक मानवीय गुणों के कारण, जिसमें उदारता, सर्वसमावेशिकता, मित्रता तथा समभाव सम्मिलित है, भारत को एक राष्ट्र तथा एक विकसित समाज के रूप में कई वैश्विक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। ये चुनौतियां इसलिए भी आईं क्योंकि भारतीय अपने स्वभावगत औदार्य के कारण आगंतुकों के कुटिल भावों को पहचान नहीं पाए तथा भावावेश में सर्वोत्तम आतिथ्य का प्रदर्शन करते रहे। 'वसुधैव कुटुंबकम' की अवधारणा वाले भारतवर्ष ने कभी बलपूर्वक विश्व विजेता बनने का सपना नहीं देखा। विश्व विजेता बनने का स्वप्न लेकर आने वाले कई विदेशी आक्रांताओं का स्वप्न भी इसी भारतभूमि में आकर चूर–चूर हुआ। यह भारत के सांस्कृतिक दर्शन के साथ–साथ सम्मिलित अद्भुत पराक्रम का ही परिणाम था कि भारत इन आक्रांताओं का मुकाबला कर सका, लेकिन अपने अतिरिक्त औदार्य और विश्वास की पराकाष्ठा के कारण 16 बार हराने के बावजूद पृथ्वीराज चौहान को 17वीं बार मुहम्मद गोरी से पराजय झेलनी पड़ी तथा अपने औदार्य के प्रतिदान में उन्होंने मुहम्मद गोरी की अमानवीय कुटिलता को झेला।

परंपरा बनी देश की संजीवनी

अपने अद्भुत ऐश्वर्य तथा सामर्थ्य के कारण भारतभूमि विश्व के दूसरे देशों के लिए कौतूहल और ईष्या का विषय बनी रही। परिणामस्वरूप इस पर कई आक्रमण हुए। अपने शौर्य और पराक्रम से इन आक्रमणों का मुकाबला करने के बावजूद भारत अपनी सांस्कृतिक विरासत के कारण छल–कपट नहीं कर पाया और कई बार पराजित भी हुआ। यह एक विचित्र ही दर्शन है कि भारत में जो भी लूट करने की नीयत से आया, उसने भी भारतभूमि में अपना स्थायी निवास ही बना लिया। उन्होंने भारत को आर्थिक रूप से कमजोर तो किया ही साथ ही भारत की संस्कृति को भी नष्ट करने के प्रयास किए। इस दौरान ऐसी कई सामाजिक कुरीतियों ने जन्म लिया जो इससे पहले भारत में कभी नहीं थीं। यह भारत के लिए एक चुनौती का ही समय था जब अपने अस्तित्व और संस्कृति की रक्षा करने के साथ ही भारत को अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करना था। तब भारत के लिए सबसे बड़ी संजीवनी भारतीय सांस्कृतिक परंपरा और बौद्धिकता ही थी।

आजादी का मजबूत आधार

मध्यकाल में जबकि भारत के एक बड़े भू–भाग पर मुगलों का शासन था, तब भी भारत के लिए सांस्कृतिक प्रेरणा देने का कार्य भक्ति आंदोलन के माध्यम से हुआ। जो लोग भक्ति आंदोलन को सिर्फ आध्यात्मिकता से जोड़कर देखते हैं वो दरअसल इस आंदोलन के पीछे छिपी गहरी प्रेरक शक्ति का आकलन करना भूल जाते हैं। भक्ति आंदोलन के माध्यम से वैचारिक जागरण और राष्ट्र चेतना का प्रसार महत्वपूर्ण तथा उस काल के लिए अनिवार्य था। भक्ति आंदोलन भारत की बौद्धिक मेधा द्वारा चलाया जाने वाला एक सांस्कृतिक आंदोलन था, जो संकट काल में भारतवासियों को उनके मूल तत्व तथा राष्ट्र गौरव का स्मरण करा रहा था। मुगलों के बाद जैसे–जैसे अंग्रेजों का आधिपत्य भारत में बढ़ने लगा, वैसे–वैसे भारत में सांस्कृतिक पुनर्जागरण के विभिन्न आंदोलनों ने जन्म लिया।

भारत की आध्यात्मिकता तथा दर्शन ऐसी प्रमुख शक्ति बनी, जिसने भारतीयों के मनोबल को ऊंचा उठाने तथा उनके अंदर राष्ट्र के प्रति निष्ठा का भाव जगाने का कार्य किया। भारत में इस दौरान उपजे आंदोलन विश्व में भी अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाते चले गए। स्वामी विवेकानंद तथा महर्षि अरविंद जैसे सांस्कृतिक पुरुषों ने भारत के विराट तत्व को पहचानते हुए विश्व में उसका प्रेरणा आख्यान प्रस्तुत किया। स्वामी विवेकानंद का कथन था कि 'हमें गर्व है कि हम अनंत गौरव की स्वामिनी इस भारतीय संस्कृति के वंशज हैं, जिसने सदैव दम तोड़ती मानवजाति को अनुप्राणित किया।' भारत में गुलामी के प्रतिकार के रूप में सांस्कृतिक परंपराओं को पुनर्जीवित कर राष्ट्र जागरण के कार्य को लोकमान्य तिलक जैसे दृष्टा नेताओं ने अंजाम दिया।

भारत का वैश्विक दृष्टिकोण तथा भारत में अंतर्निहित एकत्व की भावना ही वे प्रेरक तत्व रहे, जिन्होंने चुनौती के समय मनोबल बढ़ाने तथा प्रतिकार करने की शक्ति देने का कार्य किया। लोकमान्य तिलक, महर्षि अरविंद और वीर सावरकर जैसे संस्कृति, अध्यात्म और धर्म की ध्वजा को मजबूती से फहराने वाले सेनानी भारत में ऐसी आजादी का स्वप्न लेकर संघर्ष कर रहे थे जिसका आधार भारत की अपनी संस्कृति और वैभव पर टिका हो। सावरकर का यह कथन गौर करने योग्य है कि –'परतंत्रता तथा दासता को प्रत्येक धर्म ने सर्वदा धिक्कारा है। धर्म के उच्छेद और ईश्वर की इच्छा के खंडन को ही परतंत्रता कहते हैं।'

जयघोष के लिए जरूरी चिंतन

आज जब हम स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूर्ण करने की ओर अग्रसर हैं तब हमें निश्चित तौर पर भारत के विराट को समझने व भारत की सांस्कृतिक अस्मिता को अपने दैनिक चिंतन में लाने की महती आवश्यकता है। हमें इस सोच से बाहर निकलकर कि भारत का अस्तित्व एक स्वतंत्र देश के रूप में 75 साल का है, इस विश्वास पर दृढ़ होना होगा कि भारत उस समष्टिगत चेतना का नाम है जिसका अस्तित्व कई हजार साल पुराना है।

भारत सांस्कृतिक और आध्यात्मिक रूप से विश्व गुरू के रूप में जाना जाता रहा है। भारत की मूल प्रेरक शक्ति उसका स्वाभिमान है जो कुछ 100 वर्षों की गुलामी से मिटाया नहीं जा सकता। हमें उस न्यूनताबोध से भी निकलना होगा जो गुलामी के वर्षों में हमारे अंदर षडयंत्रपूर्वक डाला गया। हमें पराधीनता के दुरूस्वप्न को सीमित कर स्वावलंबन के नए क्षितिजों का निर्माण करना होगा। यह भारत पर्व है। हमारा प्रयास हो कि यह सिर्फ स्वतंत्रता के उत्सव का पर्व न होकर गौरवशाली समृद्ध भारत के जयघोष का पर्व बने। हम सब अतीत के दुरूस्वप्न को भुलाकर ऐसे नवनिर्माण का संकल्प लें जिसमें विराट भारतीय संस्कृति और प्रगल्भ बौद्धिकता के दर्शन होते हों और जो विगत के पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर पुनरू देवताओं को यह कहने के लिए बाध्य करें कि 'गायंति देवारू किल गीत कानि, ध्यानस्तु ते भारत भूमिभागे।'

लेखक भारतीय शिक्षण मंडल के राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सदस्य सचिव हैं।

–साभार दैनिक जागरण
दिनांक 30 अगस्त, 2021

हिन्दी कक्ष द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित दूरभाषः EPABX 7144

मुद्रकः सागर प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली। ई–मेलः sagarprinters@gmail.com